मास्टर

❑ बाबा नागार्जुन

बाबा नागार्जुन की बहुतेरी कविताओं की तरह यह कविता भी एक दस्तावेज है । हालांकि इस कविता की कई बातें अब पुरानी पड़ गईं हैं । कई ऐसी बातें हैं जो हो चली हैं जिन्हें मास्टर जी चाहते थे, मसलन कविता के आखिरी छंद में वर्णित वेतन का मामला । इसके बावजूद 1953 में रची यह कविता इस बात का ठोस प्रमाण है कि शिक्षक की बुनियादी हैसियत में तब से अब तक कोई परिवर्तन नहीं आया।

धुन-खाए शहतीरों पर बारागड़ी विधाता बाँचे
कटी भीत है, छत चूती है, आले पर बिजुइया नाचे
बरसाकर बेबस बच्चां पर मिनट-मिनट में पाँच तमाचे
दुखरन मास्टर गचते रहते किसी तरह आदम के साँचे

अरे, अभी उस रोज वहां पर सरे आम जक्शन-बाजार में
शिक्षा मंत्री स्वयं पधारे चम-चम करती सजी कार में
ताने थे बंदूक सिपाही, खड़ी रही जीपें कतार में
चटा गए धीरज का इमरित, सुना गए बातें उधार में
चास कोस से दौड़े आए जब मंत्री की सुनी अवाई
लड़कों ने बेले बरसाए, मास्टर ने माला पहनाई
संगीनों की घनी छाँव में हिली माल, मूरत मुसकाई
तंबू में धुस गए मिनिस्टर, मास्टर पर कुद दया न आई

''अंदर जाकर तंबू में ही चलो चलें दुख दर्द सुनाएं
नहीं, अकेला मैं ही जाऊं, कहीं भीउ में वह घबराएं
बचपन के परिचित ठहरे, हम क्यों न चार बात कर आएं
मौका पाकर विद्यालय की बुरी दशा परध्यान दिलाएं''
सुनकर बात गरूजी की फिर ''हा-हाँ'' बोले लड़के सारे ,
''हम जब तक सुसता भी लेंगे आगे बढ़कर कुआँ किनारे'
हाथ हिलाकर मास्टर बोला - ''जाओ बच्चों, जाओ प्यारे
चने चबाकर पानी पीना, सूख रहे हें हलक तुम्हारे''
खिचड़ी बाल, साँवली सूरत दुखरन प्राइमरी के मास्टर
लपके-लपके बढ़े आ रहे मैदानी हाते के भीतर
जहाँ तुबुओं की कतार थी जिसमें पैठे रहे मिनिस्टर
चारों ओर मिलिटरी, जिसके लोहे का टोपा था सिर पर
पके बाँस का पक्का घेरा, हरे बाँस की कच्ची फाटक
पतला बाँस बीस गज ऊंचा गड़ा हुआ था पूरी धड़ तक
फर-फर-फर फहराने वाला तिनरंगा था जिसका मस्तक
दुखरन मास्टर लगे देखने कांगरेस की शान एकटक
फाटक पर पहुंचे ते देखा, डटे हुए थे दो नेपाल
हाथों में संगीन संभाले, लटक रही थी निजी भुजाली

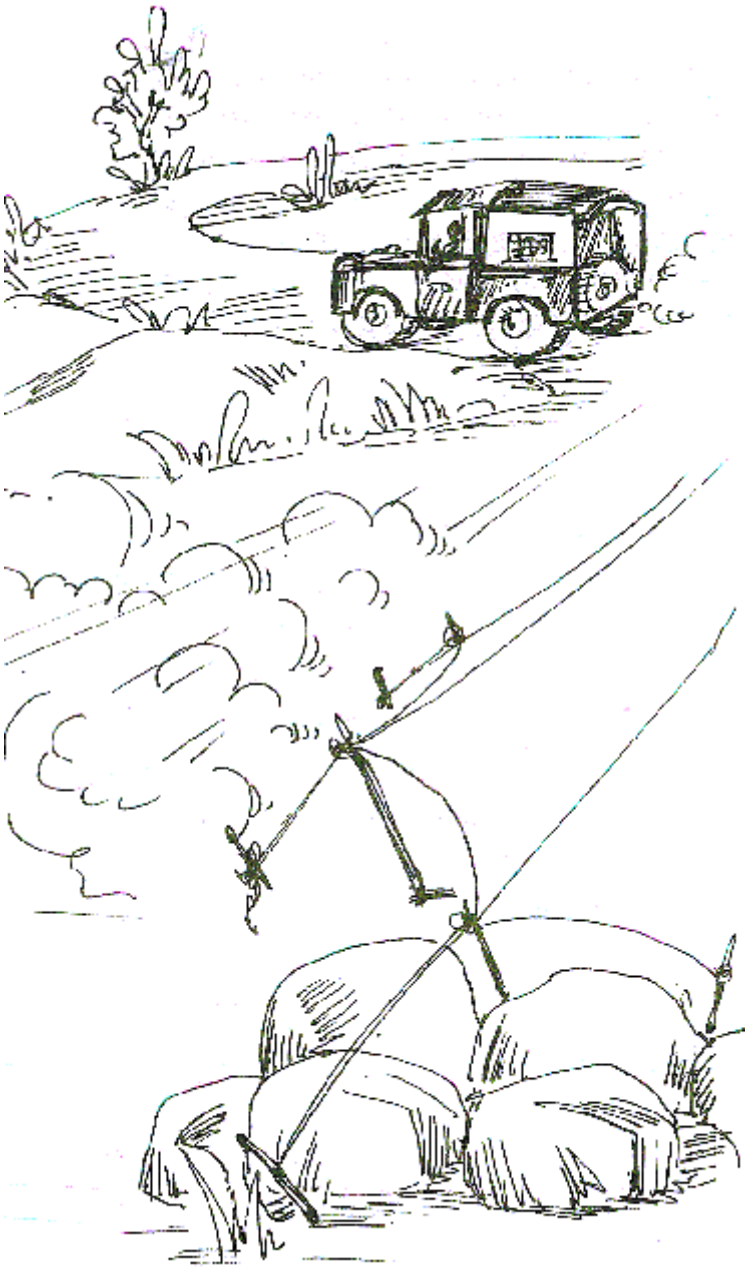

''कहां जाएगा ?'' वे गुर्राए, आँखों में उतराई लाली
दुखरन का दिल दुखी हुआ, सुन सूखा तू-तू सूखी गाली
मास्टर बोले, ''यों मत कहना, पढ़ा-लिखा हूं, मैं हूं शिक्षक
तुम भी हो जनता के सेवक, मैं भी हूं जनता का सेवक''
फिर तो धकियाकर बोले ''भागभाग, जा मत कर बकबक
हम फौजी हैं, नहीं समझते क्या होता सिच्चक-सेपक''
कुछ दिन बीते मास्टरने यह कड़ा विरोध-पत्र लिख ड़ाला
''ताम-झाम थे प्रजातंत्र के, लटका था सामंती ताला
मंत्री जी, इतनी जल्दी क्या आजादी का पिटा दिवाला
अजी आपको उस दिन मैंने नाहक ही पहनाई माला''
और लिखा, ''उस रोज आपसे भीख मांगने नहीं गया था
आप नए थे, नया ठाठ था, लेकिन मैं तो नहीं नया था
भूल गए क्या अजी आपका छोटा भाई फेल हुआ था
और आपने मुझे जेल से मर्मस्पर्शी पत्र लिखा था
'प्रभुता पाई काहि मद नांही' तुलसी बाबा भले कह गए
जिसमेंवाजिद अली बह गया उसी बाढ़ में आप बह गए
आप बने शिक्षा-मंत्री तो देहातों के स्कूल ढह गए
हम तो करते रहे पढ़नी, जेल न जाके यहीं रह गए
और आपका तो कहना क्या, मुंह से बहै आरत की धा।
आदर्शों की छोंक मारकर अजी आपने हमें सुधारा
उपदेशों की धुआँधार में अकुलाता शिक्षक बेचारा
अजी आपको लगता होगा सुखमय यह भूमंडल सारा''

लिखा अंत में ''ध्यान दीजिए, बहुत दिनों से मिला न वेतन
किससे कहूं, दिखाई पड़ते कहीं नहीं अब वे नेता-गण
पिछली दफे किया थाा हमने पटने में जा-जा के अनसन
स्वयं अर्थ-मंत्री जी निकले, वह दे गए हमें आश्वासन
और क्या लिखूं, इन देहाती स्कूलों पर भी दया कीजिए
दीन-हीन छात्रों-गुरुओं की कुछ भी तो सुध आप लीजिए
हटे मिटे यह निपट जहालत, प्रभु ग्रामीणों पर पसीजिए
कइ फंड उनमें से अब हमको वाजिब एड दीजिए''

◆◆◆